RESEARCH PAPER

RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
e-ISSN: 2455-3085 | Vol.07 | No.01 | January 2022 | pp. 82-85
Double-Blind Peer Reviewed/Refereed Journal

Synchronization of Folk Art in Modern Indian Dress: A Review
आधुनिक भारतीय परिधानों में लोक कलाओं का समन्वय : एक समीक्षा

*Mrs. Shalini Pandey

Instructor, Fashion Designing, Department of Adult and Continuing Education, Dr. Ram Manohar Lohia Avadh University, Ayodhya, U.P.

Abstract

India is a diverse country with a vast array of art forms and cultures, which serves as a distinctive identity for its region of origin. Together they contribute to the rich heritage of this country. This study is an attempt to bring together the various efforts made by the entrepreneurs, researchers, educational institutions, designers, organizations and craftsmen of this India to preserve, promote and revitalize Indian folk art through their aptitudes. It is expected to be beneficial for Indian folk art costume revivalists, designers, students and all those who are working in this field or working for the revival of folk arts of India by incorporating on different media and product variety. are willing to. The present review study is basically based on secondary sources. Under which the objective of revival of various Indian folk arts is based on extensive literature review to get detailed critical information about the various efforts made to apply them in Indian costumes.

Keywords: *folk art, modern fashion, costume, craftsmen*

Abstract in Hindi

भारत कला रूपों और संस्कृतियों की एक विशाल श्रृंखला के साथ एक विविधता भरा देश है, जो अपने मूल के क्षेत्र के लिए एक विशिष्ट पहचान के रूप में कार्य करता है। ये सब मिलकर इस देश की समृद्ध विरासत में योगदान करते हैं। यह अध्ययन इस भारत के उद्यमियों, शोधकर्ताओं, शैक्षणिक संस्थानों, डिजाइनरों, संगठनों और शिल्पकारों द्वारा अपनी अभिरुचि ० अभ्यर्थन के माध्यम से भारतीय लोक कला को संरक्षित, संबर्धित एवं पुनावर्तित करने के लिए किए गए विभिन्न प्रयासों को एक साथ लाने का प्रयास है। यह भारतीय लोक कलाओं से सुसज्जित परिधान पुनरुत्थानवादियों, डिजाइनरों, छात्रों और उन सभी के लिए लाभकारी होने की उम्मीद है, जो इस क्षेत्र में काम कर रहे हैं या विभिन्न मीडिया और उत्पाद वैभिन्नता पर समावेशित कर भारत के लोक कलाओं के पुनरुद्धार के लिए काम करने के इच्छुक हैं। प्रस्तुत समीक्षात्मक अध्ययन मूल रुप से द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। जिसके अन्तर्गत विभिन्न भारतीय लोक कलाओं के पुनरुद्धार के उद्देश्य से भारतीय परिधानों में लागू करने के लिए किए गए विभिन्न प्रयासों के बारे में विस्तृत समीक्षात्मक जानकारी प्राप्त करने के लिए व्यापक साहित्यावलोकन पर आधारित है।

Keywords: *लोक कला, आधुनिक फैशन, पोशाक, शिल्पकार*

Article Publication

Published Online: 20-Jan-2022

***Author's Correspondence**

Mrs. Shalini Pandey

Instructor, Fashion Designing, Department of Adult and Continuing Education, Dr. Ram Manohar Lohia Avadh University, Ayodhya, U.P.

ishekhar7[at]gmail.com

10.31305/rrijm.2022.v07.i01.011

© 2022 The Authors. Published by RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary. This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

परिचय :

भारत विविधता का देश है, एक ऐसा तथ्य जो इस देश के लोगों, संस्कृति और जलवायु में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इस देश में उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक फैले सैकड़ों जातीय समूह हैं, जिनमें से प्रत्येक का अपना कला रूप है जो अपने स्वाद, जरूरतों, आकांक्षाओं, लक्ष्यों, खुशियों, दुखों और संघर्षों का प्रतिनिधित्व करता है। क्षेत्रीय विशिष्टताओं के साथ, आसपास की प्रकृति और दिन–प्रतिदिन के जीवन के एक अलग पैटर्न के अलावा, उनकी कला प्रत्येक समूह के जातीय भेद और रचनात्मक प्रतिभा को प्रकट करती है। संस्कृति और विरासत में समृद्ध इतिहास के साथ, भारत कला रूपों का खजाना है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित किया गया है। ऐसी ही एक कला के रुप में भारतीय लोक कला, जो समय की कसौटी पर खरी उतरी है। पौराणिक कथाओं और प्रकृति के सामान्य विषयों को साझा करने के बावजूद, इनमें से प्रत्येक लोक कला अपनी सुंदरता और शैली में अद्वितीय है। प्राकृतिक रंगों और रंगों से निर्मित, ये सरल कला रूप आपको समय पर वापस ले जा सकते हैं और आपको विस्मय और उनके ग्रामीण आकर्षण की प्रशंसा में छोड़ सकते हैं। भारत की

विरासत में समृद्धि जोड़ने के साथ–साथ इन कला रूपों ने दुनिया भर के लोगों को आकर्षित किया है। जिनका संक्षिप्त वर्णन निम्नवत् है–:

- **मधुबनी पेंटिंग** : मधुबनी पेंटिंग, जिसे मिथिला पेंटिंग के नाम से भी जाना जाता है, एक कला रूप है जो भारत में नेपाल और बिहार में मिथिला राज्य में लोकप्रिय है। मूल रूप से, ये पेंटिंग कोहबर घर या नवविवाहितों के विवाह कक्ष की दीवारों पर मिट्टी और गाय के गोबर से लेपित की जाती थीं।
- **पट्टाचित्र :** एक हजार साल से भी अधिक पुराना, पट्टाचित्र लोक कला, ओडिशा के सबसे पुराने और सबसे लोकप्रिय कला रूपों में से एक है। यह नाम संस्कृत के शब्द पट्टा (अर्थ कैनवास) और चित्रा (अर्थ चित्र) से आया है। अपने समृद्ध रंगों, आकर्षक रूपांकनों, डिजाइनों और पौराणिक आकृतियों या प्रसंगों के चित्रण के लिए जाना जाता है।
- **मैसूर पेंटिंग :** मैसूर पेंटिंग एक महत्वपूर्ण दक्षिण भारतीय कला रूप है, जो विजयनगर स्कूल ऑफ पेंटिंग से आता है। जबकि कला के रूप की उत्पत्ति अजंता काल (दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से 7 वीं शताब्दी ईस्वी) तक की जा सकती है, यह वास्तव में विजयनगर साम्राज्य के संरक्षण में फली–फूली और विकसित हुई। मैसूर पेंटिंग दर्शकों में भक्ति और विनम्रता की भावनाओं को प्रेरित करने के लिए जानी जाती है।
- **तंजौर पेंटिंग** : तंजौर पेंटिंग (जिसे तंजावुर पेंटिंग के नाम से भी जाना जाता है) की उत्पत्ति तंजावुर के मराठा दरबार (1676 – 1855) में हुई थी। समृद्ध रंगों, चमचमाती सोने की पन्नी, व्यापक गेसो काम और कांच के मोतियों या कीमती और अर्ध–कीमती पत्थरों के उपयोग की विशेषता, तंजौर पेंटिंग दक्कनी, विजयनगर, मराठा और यहां तक कि पेंटिंग की यूरोपीय शैलियों का एक सम्मिलन है।
- **चेरियाल स्क्रॉल पेंटिंग** : चेरियाल स्क्रॉल पेंटिंग, नकाशी कला का एक शैलीबद्ध संस्करण है। इसके अन्तर्गत आम तौर पर 40 से 45 फीट लंबा स्क्रॉल फिल्म रोल कुछ लुढ़का हुआ होता है, जिसके द्वारा भारतीय पौराणिक कथाओं और लोक परंपराओं की कहानियों को चित्रित करने के रुप प्रचलित है।
- **राजपूत पेंटिंग** : राजपूत पेंटिंग, जिसे राजस्थानी पेंटिंग के नाम से भी जाना जाता है। यह पेंटिंग की एक प्राचीन शैली है, जो भारत में राजपुताना के शाही दरबार में फली–फूली।
- **कलमकारी** : कलमकारी कला का मूल रूप संगीतकारों और चित्रकारों द्वारा कहानी कहने में प्रयुक्त किया जाता रहा है, जिन्हें चित्रकट्टी कहा जाता है। कलमकारी कला ने मध्य युग में हैदराबाद में गोलकुंडा सल्तनत के राज्य में एक कला के रूप में आकार लिया और मुगलों के संरक्षण में फला–फूला, जिन्होंने कला को अपना नाम देते हुए कलाकारों को गुणमकर के रूप में संदर्भित किया।
- **कालीघाट पेंटिंग** : कालीघाट पेंटिंग या कालीघाट पट एक कला रूप है जिसकी उत्पत्ति 19वीं शताब्दी के बंगाल में, कोलकाता के कालीघाट काली मंदिर और उसके आसपास हुई थी। उन्नीसवीं शताब्दी में, बंगाल में पनपने वाली पेंटिंग का एकमात्र स्कूल स्क्रॉल पेंटिंग की पारंपरिक कला थी। कपड़े या पटों पर किए गए इन चित्रों में देवी–देवताओं के चित्र और तुलसीदास के रामचरित मानस जैसे महाकाव्यों के दृश्यों को दर्शाया गया है।
- **पहाड़ी पेंटिंग** : जैसा कि नाम से पता चलता है, पहाड़ी पेंटिंग 17 वीं और 19 वीं के बीच हिमालय के पहाड़ी राज्यों जैसे बसोहली, मनकोट, नूरपुर, चंबा, कांगड़ा, गुलेर, मंडी व गढ़वाल में उत्पन्न ज्यादातर लघु रूपों में की गई पेंटिंग के एक रूप को संदर्भित करती है।
- **वार्ली पेंटिंग :** महाराष्ट्र और गुजरात की सीमाओं के आसपास के पहाड़ों और तटीय क्षेत्रों से वारली जनजातियों द्वारा प्रचलित एक कला रूप, वारली पेंटिंग की उत्पत्ति लगभग 3000 ईसा पूर्व हुई थी। पारंपरिक वार्ली पेंटिंग गेरू की मिट्टी की दीवारों पर सफेद पेंट के इस्तेमाल के लिए जानी जाती हैं।
- **गोंड पेंटिंग :** गोंड पेंटिंग एक कला रूप है, जो गोंडों द्वारा संचालित एवं संबर्धित है। यह लाक कला/पेण्टिंग, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ और ओडिशा की जनजातियों में पायी जाती है।

लोक कला का आधुनिक फैशन के साथ समन्वय :

यह अध्ययन विभिन्न लोक कलाओ के डिजाइनों के प्रारुपिक परिचय को प्रक्षेपित करता है। आधुनिक भारतीय परिधानों (कुर्तियों, साड़ियों और महिलाओं की पोशाक) पर मधुबनी और वारली पेंटिंग्स के परिधानों पर उनके अनुप्रयोग के माध्यम से नए आयाम खोजने और इन पेंटिंग्स को आधुनिक फैशन की दुनिया में उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया। प्रस्तुत समीक्षात्मक अध्ययन उक्त पारंपरिक कला रूपों और आधुनिक तकनीक को संयोजित करने का प्रयास करता है, ताकि वे परिवर्तित परिवेश व प्रारुप में स्थिर व संरक्षित रहें। मधुबनी पेंटिंग से प्रेरित वस्त्र उत्पादों के लिए डिजाइनों का अनुकूलन मधुबनी पेंटिंग्स डिजाइनरों के द्वारा मधुबनी पेंटिंग के पारंपरिक रूपांकनों का प्रयोग कुशन कवर, फोल्डर और टेबल कवर जैसे कपड़ा लेखों पर हाथ से पेंटिंग के माध्यम से उन्हें लागू करने का प्रयास किया जा रहा है। एपन पेंटिंग्स पर

शोधकर्ताओं ने आदिवासी लोक चित्रकला के संवर्धन के लिए समृद्ध डिजाइनों के स्रोत के रूप में मान्यता प्रदान करने के साथ ही, आज आधुनिक फैशन उत्पादों को विकसित करने के लिए प्रोत्साहन प्रदान किया जा रहा है। जिससे एपन कला के संरक्षण में मदद मिलने और टेक्सटाइल डिजाइनिंग के लिए मौजूदा डिजाइन कैटलॉग का विस्तार करने की उम्मीद बढ़ी है। इसी तरह, कपड़ा डिजाइनर बीना राव ने कलमकारी पेंटिंग के साथ अपने संग्रह का प्रदर्शन किया। उनके संग्रह में भड़कीले कपड़े, कच्चे रेशम की लंबी स्कर्ट, गहरे लाल और जंग में चिंट्ज शैली में हाथ से पेंट की गई कलमकारी की एक हाइलाइट के साथ शामिल है। यह समसामयिकीकरण में कलमकारी को आधुनिक दुनिया में फिट करने के लिए बनाया गया था, जिससे इसकी वृद्धि और निर्वाह हो सके। इस तरह के संग्रह का प्रदर्शन समाज पर स्थायी प्रभाव डालता है और कला रूपों को लोकप्रिय बनाने के साथ ही उनका विकास हो रहा है। इसी प्रकार गोंड़ कला से जुड़े कारीगरों की मध्य प्रदेश की गोंड जनजातीय कला, उनकी परंपरा, प्रासंगिकता और समकालीन डिजाइन में स्थिरता प्रदान कर रही है। जिसके परिणाम सवरुप आज ग्राहको के लिए कुर्ता, दुपट्टा, टॉप, स्कार्फ, स्टोल जैसे नए पारंपरिक गोंड पेंटिंग मोटिफ गोंड पेंटिंग का उपयोग कर परिधान की डिजाइनिंग तैयार की जा रही है। शोधकर्ताओं ने इस पुरानी कला को पुनर्जीवित करने के प्रयास के रूप में परिधान पर गोंड पेंटिंग रूपांकनों व डिजाइनों को लागू करने के लिए स्क्रीन प्रिंटिंग विधि का प्रयोग करके परिधान पर गोंड पेंटिंग के रूपांकनों को जोड़ा। गोंड पेंटिंग से मुद्रित उत्पाद (चोली और कुर्तियां), आधुनिकीकरण और तकनीकी उन्नति द्वारा भारत की जनजातीय कलाओं को पुनर्जीवित करने सार्थक प्रयास है।

लोक कला मंदाना, वारली, गोंड, सौरा, ऐपन पेंटिंग डिजाइन करने का एक मजबूत स्रोत इस अध्ययन का उद्देश्य कपड़ों और जीवन शैली के सामान पर लोक चित्रकला रूपांकनों को लागू करना है। विभिन्न माध्यमिक संसाधनों से मूल डिजाइन और उत्पादों का निर्माण एवं संग्रह कर आधुनिक डिजाइनों का प्रारुप तैयार किया जा रहा है। उसके बाद, इन डिजाइनों को विभिन्न अलंकरण तकनीकों जैसे पेंटिंग, कढ़ाई, छपाई या उपरोक्त सभी के संयोजन के माध्यम से स्थानांतरित किया जाता है। इसके बाद चयनित डिजाइनों को टी–शर्ट, फाइल फोल्डर, कागज से बने बैग, पेंसिल स्टैंड आदि जैसे उत्पादों पर लागू उत्पाद को विविधिता प्रदान किया जा रहा है जिसमें आज भारतीय लोक चित्रों व कलाओं व्यापक समायोजन भी समन्वित स्वरुप में हो रहा है। आज कलमकारी लोक कला के माध्यम से विभिन्न प्रकार के परिधान बनाये जा रहे हैं। भारत के अन्य हिस्सों से जरी, प्रिंट और थ्रेडवर्क के रुप में कलमकारी कला दृष्टिगत होती है। इस कला को बचाने के लिए हैदराबाद और तिरुकान्नूर, तिरुपति में उनके बिक्री आउटलेट हैं जो इसे अभिजात्य वर्ग तक ले जा रहे हैं। उनके उत्पाद दूर–दराज के बाजारों में पहुंच गए हैं। कला भी बढ़ी है और कलाकार भी।

भारतीय लोक कला और शिल्प डिजाइनों की प्रेरणा से फैशन उत्पाद विकास सौरा, गोंड, पट्टाचित्र, भित्ति चित्रकला जैसे चित्रों से आधुनिक डिजाइनरों को प्रेरणा मिली। उन्होंने ब्लॉक, स्क्रीन और हैंड पेंटिंग द्वारा बुने हुए परिधानों पर चुनिंदा स्थान पर लोक कलाओं की डिजाइनों को शामिल किया। कुर्ता, स्टोल, टी शर्ट स्विग बैग, पर्स, पिलो कवर, रैप ओवर स्कर्ट जैसे उत्पाद विकसित किए गए। वर्तमान समय में फैशन डिजाइनरों व वस्त्र निर्माताओं के द्वारा में उपभोक्ता वरीयता और आधुनिक डिजाइन पोशाक के समेलन पर अधिक ध्यान केंद्रित किया जा रहा है। डिजाइनरों द्वारा वस्त्र और परिधान पर अपनी अभिव्यक्ति के माध्यम से लोक चित्रों को पुनर्जीवित करने के निरंतर प्रयास को स्वीकार किया जा चुका है। प्रसिद्व डिजाइनर आरती विजय गुप्ता ने गोंड चित्रों को पहनने योग्य आसान आरामदायक सिल्हूट में संशोधित किया गया। जिसमें क्रॉप और लॉन्गलाइन जैकेट्स के साथ अनोखे गाउन और ड्रेसेस, बैलून स्लीव ब्लाउज, ट्राउजर और शर्ट और कुर्ते के साथ साड़ियाँ शामिल थी। नोएडा की प्रसिद्व डिजाइनर दया बंसल ने अपना संग्रह मिथिला लॉन्च किया, जिसमें उन्होंने इस भारतीय कला को पारंपरिक परिधानों तक सीमित रखने से बचने के लिए पश्चिमी कट के साथ परिधान डिजाइन तैयार किए, और इसलिए उन्होंने श्ट्रेंच कोट, पेप्लम्स, वन–शोल्डर जंपसूट जैसे आधुनिक वस्त्रों– कॉटन सिल्क, फ्लेयर्ड स्कर्ट और रफल्ड ब्लाउज सेट, पेंसिल स्कर्ट और अद्वितीय प्री–ड्रेप्ड पैंटसूट साड़ियों में प्रिंटेड ड्रेसेज को तैयार किया।। उन्होंने मधुबनी कला का प्रयोग बिहार और वाराणसी से प्राप्त रेशम और ऑर्गेना का इस्तेमाल किया, ताकि संग्रह एक ही समय में समृद्ध और बहुमुखी व आकर्षक स्वरुप में दृष्टिगोचर हो सके। इस तरह के प्रयास पारंपरिक कलाओं के दायरे को बढ़ाते हैं, इसे जीवित रखते हैं और भविष्य के लिए महती भूमिका का निर्वाह करते हैं।

मधुबनी कला से पारंपरिक वस्त्रों के पुनरुद्धार, शैलीकरण और अनुकूलन व आधुनिकीकरण के लिए सीएडी प्रयुक्त मधुबनी पेंटिंग्स अध्ययनकर्ताओं का सुझाव है, कि एडोब फोटोशॉप, इलस्ट्रेटर जैसे अन्य आधुनिक तकनीकी सॉफ्टवेयरों का उपयोग कर, हाथ से तैयार डिजाइन और उनके संशोधन को डिजिटाइज करने के लिए किया जा सकता है। डिजिटल रूप से संशोधित डिजाइनों को डिजिटल प्रिंटर का उपयोग करके विभिन्न प्रकार के कपड़ा लेख जैसे साड़ी, स्टोल, हैंडबैग, परिधान, बैग, जूते, फैशन के सामान आदि बनाने के लिए मुद्रित किया जा सकता है। भारत सरकार ने कारीगरों को प्रोत्साहित करने और समर्थन देने के लिए कई प्रयास किए हैं ताकि उनकी कला को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिले सके।

निष्कर्ष :

भारतीय सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित व संबर्धित करने में लोक कलाओं का महत्व सदियों से रहा है। जिसे आज भारतीय परिधानों के नये स्वरुप व कलेवर में वैकासिक गति प्रदान की जा रही है। भारत के विभिन्न लोक कलाओं और उनके पुनरुद्धार को प्रस्तुत किया गया है। लोक कलाओं के पुनरुद्धार के लिए पारंपरिक और आधुनिक दोनों तरीकों का इस्तेमाल किया जा सकता है। लोक कलाओं का आधुनिक भारतीय परिधानों के साथ समन्वित प्रारुप में कुछ विशेषज्ञ स्क्रीन प्रिंटिंग, डिजिटल प्रिंटिंग जैसी आधुनिक प्रक्रियाओं का उपयोग करने को मुख्य रूप से दो कारणों से उपयुक्त नहीं मानते हैं। प्रथम यह है कि पारंपरिक रूप से लोक कलाएं पर्यावरण के अनुकूल थीं और आधुनिक तरीकों का उपयोग इस भावना का उल्लंघन करता है। और द्वितीय यह है कि इन लोक कलाओं के बड़े पैमाने पर उत्पादन से इन कला रूपों में विकृति आएगी जिससे समय के साथ मौलिकता का नुकसान होगा। वस्त्र उत्पादों पर लोक चित्रों के पुनरुद्धार आधुनिक परिधानों के साथ समन्वय के लिए किए गए उक्त संरक्षित एवं संबर्धित कार्यों के अवलोकन से स्पष्ट है,कि एक मिश्रित दृष्टिकोण ही वर्तमान समय की आवश्यकता है। यह अध्ययन इस क्षेत्र में भविष्यगत प्रयासों के लिए उपयोगी जानकारी प्रदान करेगा।

References

Folk and Tribal Paintings: The Warli School – Academy of Fine Arts and Literature – Google Arts & Culture.

Culture and heritage – folk and tribal art – warli folk painting. (n.d.). Retrieved April 21, 2021.

Baral, B., Divyadarshan, C., & Sharma, A. (2018, October 21). Saura Painting – Raghurajpur, Orissa. Retrieved April 07, 2021.

Sharma, E. (2016). Digitalization of Motifs Based on Indian folk Paintings through CAD and their Adaptation on Apparels using Digital Printing Technique. Research Journal of Family, Community and Consumer Sciences, 4(1).

Purwar, S. (2018). Folk arts: A strong source of designing. International Journal of Applied Home Science, 5(2), 514-517.

Singh, S. (2018). Study of Hand Painted Kalamkari to Design New Motifs. International Journal of Computer Application, 8(2), 25-40.

Ghosh, S. (2018). Retracing Kalamkari's journey: From classic to a contemporary textile art. The Chitrolekha Journal on Art and Design, 2(2), 4-28.

Bhandari, V., Rani, A., Gahlot, M., & S. (2019). Aipan: An Inspiring Folkart for Textile Designing. International Journal of Current Microbiology and Applied Sciences, 8(6), 527-537.

Sen, P. (2019, July 05). Inspired by Madhubani art, mithila by Designer Daya Bansal is a fusion of Indian art and MODERN SILHOUETTES. Retrieved April 2018.

Babel, S., & Sachihar, L. (2020). Designing Cushions Picking Inspiration from Traditional Folk Painting: Sanjhi. International Journal of Science and Research, 9(1), 1106-1108.